लछमनिया का चूल्हा

विश्वासी एक्का

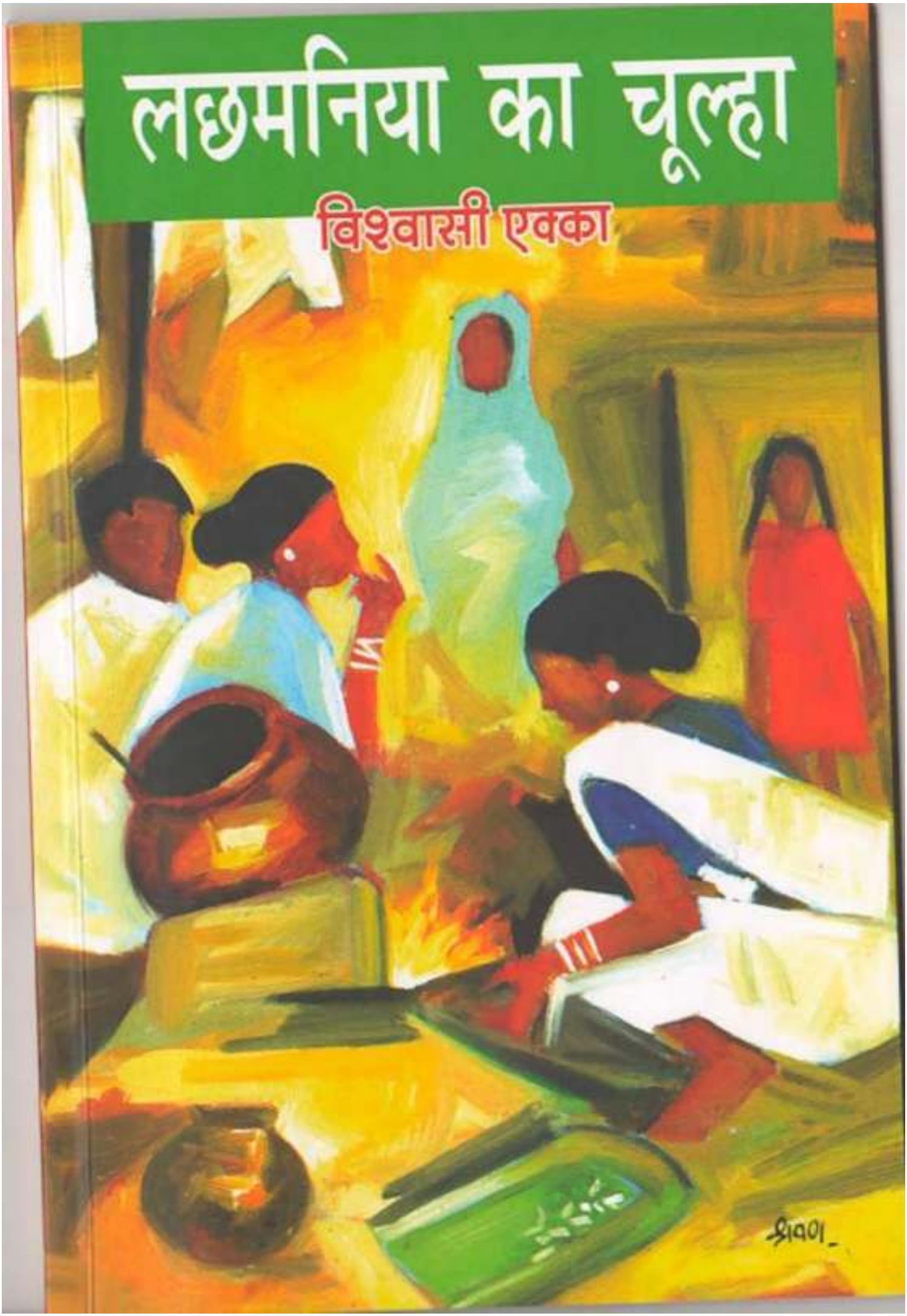

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
आदिवासी देशज भाषाओं में उत्कृष्ट प्रकाशन के 15 वर्ष

मूल्य : ₹ 120

© विश्वासी एक्का
प्रथम संस्करण : जनवरी 2018

प्रकाशक :
प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची - 834009
फोन : 09234301671/0651-2201261
ई-मेल : pkfranchi@gmail.com
वेब पता : www.kharia.in

आवरण चित्र : श्रवण कुमार शर्मा, अम्बिकापुर, सरगुजा, (छत्तीसगढ़)
आवरण सज्जा : बिर बुरु ओम्पाय मीडिया, राँची (झारखंड)
मुद्रक : कैलाश पेपर कन्वर्सन प्रा. लि., राँची - 834001

LACHHMANIA KA CHULHA
Hindi poems by Vishwasi Ekka

ISBN : 978-93-81056-72-1

खरपतवार के विरुद्ध संघर्ष-सृजन की कविताएँ

कविता क्या है इस पर संस्कृत के आचार्यों ने बहुत विस्तार से लिखा है। आधुनिक हिंदी के काल में भी आलोचकों ने बताया है कि कविता किसको कहते हैं। इस प्रकार संस्कृत की काव्य मीमांसा से लेकर आधुनिक कविता की आलोचना तक कविता को समझने और समझाने की एक लंबी परंपरा रही है। यह पूरी परंपरा कविता को कवि की कल्पना शक्ति, यथार्थ के प्रति उसकी समझ और उसके कला-कौशल के बतौर देखती है। 'साहित्य दर्पण' के रचयिता आचार्य विश्वनाथ का कहना है, 'वाक्यम् रसात्मकं काव्यम्' यानि रस की अनुभूति करा देने वाली वाणी काव्य है। पंडितराज जगन्नाथ के अनुसार, 'रमणीयार्थ-प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' अर्थात् सुंदर अर्थ को प्रकट करने वाली रचना ही काव्य है। 'कविता क्या है' लेख में आचार्य रामचंद्र शुक्ल मानते हैं, 'कविता वह साधन है जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।'

परंतु कविता के बारे में क्या यही समझ आदिवासियों की है? जिनका समस्त जीवन ही काव्यात्मक होता है। लय, रस और गति से भरपूर। जिनका चलना और बोलना ही नृत्य और गीत है? या फिर संस्कृत और हिंदी से इतर गीत व कविता की उनकी अपनी दुनिया है। जिसमें उनके अपने प्रतिमान और जीवन को देखने-समझने और उसे अभिव्यक्त करने की एक भिन्न दृष्टि है। जो यह बताती है कि कविता सिर्फ 'रस की अनुभूति', 'सुंदरता' का अर्थ बताने और मात्र 'मनुष्य के रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा' के लिए नहीं होती। वह असल में सुंदरता और असुंदरता की परिधि से बाहर समूची सृष्टि की अभिव्यक्ति होती है। जिसे गाते तो सभी हैं, पशु-पंछी, जंगल-पहाड़ और वनस्पतियां, नदियां और झरने, बादल-बारिश और हवाएं, सूरज-चाँद और सितारे; और इन सबके साथ मनुष्य भी। पर चूंकि हम सिर्फ मनुष्यों की भाषा जानते हैं इसलिए सृष्टि के अन्य तत्त्वों के गीत और काव्य को नहीं समझ पाते। कविता की समझ को लेकर यह मूल अंतर है आदिवासी और गैर-आदिवासी समाज की गीत-काव्य परंपरा में।

विश्वासी एक्का की प्रस्तुत कविताएँ इस दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण हैं जो हमें आदिवासी कविता कहन परंपरा की ओर ले जाती हैं। चूंकि उनकी कविताएँ हिंदी में लिखी गई हैं, हिंदी भाषा की दुनिया में ही वे पली-बढ़ी हैं,

सर्वप्रथम 'देशबंधु' छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार ललित सुरजन के प्रति मैं बहुत आभारी हूं, आपने काव्य सृजन के लिए मुझे बहुत हौसला दिया। आपके स्नेह ने मुझे निरंतर लिखते रहने को प्रेरित किया। नगर के वरिष्ठ साहित्यकार और अपने गुरु डॉ. रामकुमार मिश्र व डॉ. आशा शर्मा का मार्गदर्शन सदैव मुझे मिलता रहा है। मेरे नगर के साहित्यकार साथी विजय गुप्त, वेदप्रकाश अग्रवाल, प्रीतपाल सिंह, राजेश मिश्र, डॉ.नीरज वर्मा, जे. एन. मिश्र और उन सभी साथियों का जिन्होंने मेरे रचना कर्म को निरंतरता प्रदान करने में हमेशा उत्प्रेरक की भूमिका निभायी है, मैं ऐसे तमाम रचनात्मक सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। भूमिका लिखने और प्रकाशन हेतु हरसंभव सहयोग उपलब्ध कराने के लिए आदिवासी विमर्श की ख्यात साहित्यकार वंदना टेटे की मैं तहेदिल से शुक्रगुजार हूं।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से हर काम में परिवार सदा हमारे साथ रहता है। व्यक्तिवादी दुनिया में परिवारों में तेजी से टूटन हो रही है पर हमारा परिवार अभी भी संयुक्त है। मेरे परिवार ने मुझे हमेशा पढ़ने-लिखने के लिए प्रोत्साहित किया है। मायके में भी और ससुराल में भी। स्मृतिशेष मां-पिता सोसन तिग्गा और प्रेमसाय तिग्गा की तरह ही 94-95 वर्षीय सास-ससुर भी मेरी रचनात्मकता के स्थायी संबल हैं। जीवनसंगी प्रदीप कुमार एक्का और बेटे तरंग, इन दोनों का बहुत समय मैंने साहित्यिक सृजन और गतिविधियों पर खर्च किया है। इन सभी के लिए आभार की बजाय यही कहूँगी कि हमारा परिवार ऐसा ही प्यारमय बना रहे।

यह मेरा पहला कविता संग्रह है। 'लछमनिया का चूल्हा' शीर्षक रखने की प्रेरणा भी मुझे गाँव में चूल्हा फूंकती स्त्रियों से मिली। लकड़ी गीली होने की स्थिति में वे परेशान हो जाती हैं क्योंकि घर के अन्य सदस्यों को खाना पकाकर खिलाना उन्हीं की जिम्मेदारी होती है। इस संग्रह की कविताओं के माध्यम से ग्रामीण और आदिवासी जीवन को अपनी लेखनी से मैंने मात्र स्पर्श किया है, उसकी गहराई तक पहुँचने की क्षमता मुझमें नहीं है। आपकी पाठकीय प्रतिक्रियाएँ मुझे और क्षमतावान बनाएँगी, इसी आकांक्षा के साथ यह संग्रह आप सभी को समर्पित करती हूँ।

विश्वासी एक्का

बिरसा जयंती,
15 नवंबर, 2017

कतार

अभिमत	5
अपनी बात	7
1. बिरसो	13
3. रुई सी खुशियाँ	14
3. मंगरू की उलझन	16
4. सुखमतिया का सुख	18
5. जंगल की आग	20
6. भूख	22
7. गाँव की खुशियाँ	24
8. सपनों की भूल भुलैया	25
9. सोनमछरी	27
10. गजदल	28
11. डेंकी	30
12. लछमनिया का चूल्हा	31
13. निरुत्तर	33
14. बदला	34
15. उनकी भूख	36
16. अपनी-अपनी सोच	38
17. मतवाले	40
18. सोने की चमक	42
19. गाँवों का देश	44
20. मृगमरिचिका	46
21. फिर सुबह होगी	48
22. दरिन्दे	49
23. अब और नहीं	50
24. स्त्री का स्वप्न	51
25. उड़ान	53
26. तकलीफ होती है मुझे	54
27. अंतर्द्वन्द्व	56
28. बचाना है आदिवासियों को	57

हिन्दी कविता में छत्तीसगढ़ से नया लेकिन सधा हुआ आदिवासी स्वर। पिछले कई वर्षों से लिख रही विश्वासी एक्का का यह पहला कविता संग्रह है। इस संग्रह की कविताओं में प्रकृति और आदिवासी-ग्रामीण परिवेश का आदिम संगीत है, तो जंगल से शहर तक हाहाकार करता आदिवासी जीवन और चूल्हे में तपती स्त्रियाँ भी।

विश्वासी एक्का की कविताएँ हमें आदिवासी कविता कहन परंपरा की ओर ले जाती हैं। ये कविताएँ उनकी तरह ही हिन्दी की दुनिया में साथ-साथ पली-बढ़ी हैं फिर भी पूरी-पूरी हिंदी परंपरा में कैद नहीं हैं। शब्दों, वाक्यों के गठन और प्रतिमानों तथा विशेषकर कथ्य व भावों के सहारे मजबूती से आदिवासी जमीन पर टिकी हैं। आधुनिक 'सभ्यता' के दुष्परिणामों से त्रस्त आदिवासी जीजिविषा जड़ नहीं छोड़ती। संग्रह की सभी 60 कविताओं में आदिवासी जीवन है। इनमें परंपरा की गंध है तो आधुनिक समाज जनित त्रास भी है। जिसे आजी, बिरसो, सुखमतिया, मंगरू और लछमनिया जैसे जीवित आदिवासी चरित्र गाते हैं। इसी तरह सृष्टि और जीव-जगत के अन्य तत्व, जैसे- सोनमछरी, गजदल, ढेकी, धतूरे के फूल, सिहार के पत्ते, गोदना, बया का घोंसला आदि भी गीतों के द्वारा जीवन के सुंदर-असुंदर हलात को बखूबी अभिव्यक्त करते हैं। संग्रह की कविताओं में कवयित्री ने आदिवासी और ग्रामीण किसानी जीवन के लगभग सभी पहलुओं को छुआ है। यह छुअन प्रेम सरीखी है जिसमें रुदन भी है और विराट प्रकृति व जीवन का महाउल्लास भी। प्रकृति के अनुशासन से रहित मनुष्य निर्मित हिंसक समाज-व्यवस्था में आदिवासी जीवन और प्रकृति का क्या हाल है, यही बताती हैं इस संग्रह की कविताएँ।

आवरण चित्र : श्रवण कुमार शर्मा

कविता

₹ 120

9 789381 056721

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड
www.kharia.in | www.akhra.org.in | pkfranchi@gmail.com